पानपाट के पलटे दिन ज्योग्राफिकल सर्वे के मुताबिक तीन साल में नौ करोड़ लीटर पानी रोका गया

छिपकर 'पानी' बोया था, सोचा था पानी के पेड़ उगेंगे

पानपाट से लौटकर रुमनी घोष
इंदौर, 18 मार्च।

'मैंने बचपन में छिपकर पानी बोया था, सोचा था पानी के प्यारे पेड़ उगेंगे।

देवास की सिंद्राणी पंचायत के पानपाट गांव के बच्चे-बच्चे ने तीन साल पहले यह सपना देखा था जो आज सच हो गया। बहते पानी को रोका...फिर एक-एक बूंद को जमीन में बो दिया...बीज फूटा, फसलें लहलहाईं, फिर वह गांव जी उठा जो 50 सालों से मर रहा था।

ज्योग्राफिकल सर्वे के मुताबिक तीन साल में यहां लगभग नौ करोड़ लीटर पानी रोका गया। मात्र 460 आबादी वाले इस गांव की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि बरसात का पानी ठहर ही नहीं सकता। लिहाजा विभावरी संस्था की मदद से खेत तलाई (खेतों में छोटे तालाब) और मेंड़ खंती (खेतों के चारों ओर खाई) खोदकर पानी को जमीन में उतार दिया गया और अब वही पानी फसलों का रूप धरकर उग आया है। 3 मई 2001 को इस संवाददाता ने जब इस गांव का दौरा किया था तो यहां पीने का पानी नहीं था। हर घर का एक सदस्य पहाड़ी के नीचे पांच-सात किमी दूर बसे गांवों से पानी लाने में ही जुटा रहता था। 8-15 दिन में नहाने की बारी आती थी। जब दूसरों के खेतों में फसलें लहलहाती तो पूरा गांव 20 रुपए रोजाना पर दो जून रोटी के लिए निकल पड़ता था। अब सब कुछ बदल गया है।

▶▶शेष पेज 10 पर

पानी की खेती देखने के लिए आज उमड़ेगी भीड़

गांव में शुक्रवार को पानी चौपाल सजेगा, बधावा गूंजेगा और दूर गांव के लोग यहां 'पानी की खेती' देखने आएंगे। मुख्यमंत्री के सलाहकार अनिल दवे ने भी यहां आने की इच्छा जाहिर की है। पूरा गांव उत्सव की तैयारियों में जुटा है। गांव-गांव न्योता भेजा है। पानी की खेती के बारे में समझाने की जिम्मेदारी गांव की महिलाओं ने ली है। छह-छह महिलाओं का समूह बनाकर वे अलग-अलग टोलियों के पास जाएंगी और अपने अनुभव उनकी झोली में डालेंगी। ढोलक की थाप पर झूमती युवाओं की टोली भी मेहमानों के संग-संग चलेगी। तेजाजी की कथा होगी और नर्मदा के नाम का रतजगा।

| मध्यप्रदेश | राजस्थान | छत्तीसगढ़ | उत्तरप्रदेश | हरियाणा | हिमाचल | चंडीगढ़ | महाराष्ट्र | भारत में 20 संस्करण

दैनिक भास्कर 19 मार्च 04

से उनके होटल और रेस्तरां की चेन हैं पर वेटरों की क्या मजाल कि एक भी मेहमान (भारतीय दर्शक) से खाने की कीमत वसूल लें। दर पर आने वाले मेहमान को मुफ्त रोटी-पानी सर्व होगा, यह सिराज का हुक्म है। सर जमीन-ए-हिंद को देखने की तड़प में मोहम्मद अदनान गिलानी तहेदिल से दुआ करते हैं कि हममें एका हो जाए। करनाल (हरियाणा) में अपने पुरखों की जमीन देखने की उनकी हसरत शायद तभी पूरी होगी।

छिपकर 'पानी' बोया...

पानी की पहली बूंद शंकर के खेत में रुकी और फिर खंतियों व तलाइयों में से रिसते हुए नाल में पहुंचती है जहां बांध बनाकर उसे रोक लिया गया। गांव में गेहूं की पहली फसल उगाने वाली शांता बाई कहती है नर्मदाजी को खेत में ही रोक लिया जिससे हमारे दिन फिर गए। सोयाबीन, गेहूं के बाद तीसरी फसल के रूप में मूंग, लहसुन, मैथी, पालक, टमाटर, मूली, भिंडी, तरबूज भी उगा रहे हैं। हेमराज, जगदीश, शेरसिंह कहते हैं पानी आया तो दिल में जितनी आस थी सब उड़ेल दी मगर अगले साल मिट्टी परीक्षण करवाकर वही उगाएंगे जो यहां अच्छी पैदावार दे। पप्पू ने बेशरम और अकाऊ की पत्ती से जैविक पेस्टीसाइट्स भी तैयार कर लिया।

गल्ला भरते ही गांव की तस्वीर बदल गई। कल तक जो गांव वाले राशन की दुकानों के खुलने की राह तकते थे आज उस गांव के सरपंच अमरसिंह नाईक सीना तानकर कहते हैं अब तक सरकार से लिया, अब हम पैदा कर सरकार को देंगे। विभावरी के निदेशक सुनील चतुर्वेदी कहते हैं हमने पानी रोकने में मदद की और सामाजिक बदलाव खुद ब खुद आ गया, अब तक यहां 15 किमी दूर सतवास तक आने-जाने का कोई साधन नहीं था लेकिन अब यहां दिनभर में तीन बस (जिसे ये डिब्बा कहते हैं) चलने लगी हैं। नलकूप खुदे तो गांव के युवाओं ने इसे सुधारने का प्रशिक्षण भी लेना शुरू कर दिया।

पानपाट की विकास यात्रा

कार्य	2000	2004
पीने का पानी	0	छह तालाब, दस नलकूप, एक बावड़ी (प्रस्तावित)
सिंचित रकबा	0	40 हेक्टेयर
ज्वार उत्पादन	छह क्विंटल	10 क्विंटल
गेहूं	0	20 क्विंटल
मजदूरी	20 से 25 रुपए प्रतिदिन	40 से 50 रुपए प्रतिदिन

लक्ष्य- अब गांव वालों का लक्ष्य है छत का पानी कोठी में यानी पूरे 55 घरों में रूफ वाटर हार्वेस्टिंग जिसे इंजीनियरों और गांव वालों ने मिलकर डिजाइन किया।